एक पाठ्य-पुस्तक का चुनाव
(Selection of a Text-Book)

एक विशेष कक्षा के लिए एक अच्छी सामाजिक शिक्षा की पाठ्य-पुस्तक का चुनाव आसान काम नहीं है। ज्यादातर पाठ्य-पुस्तकों के चुनाव का कार्य स्कूल शिक्षा के बोर्ड या शिक्षा विभाग के विशेषज्ञों के द्वारा किया जाता है। परन्तु कई निजी स्कूलों में यह कार्य सामाजिक शिक्षा के अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। चाहे विद्यार्थियों की योग्यताओं में व्यक्तिगत अन्तर है परन्तु पाठ्य-पुस्तक सभी की आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने वाली होनी चाहिए। एक सामाजिक शिक्षा की पाठ्य-पुस्तकों में निम्नलिखित बातें होनी चाहिए :

1. **लेखक** (The Authorship) अध्यापक को यह निश्चित कर देना चाहिए कि पाठ्य-पुस्तक एक लेखक के द्वारा लिखी गई हो जिसको सामाजिक-शिक्षा के अध्यापन के अनुभवों में विशेषता प्राप्त और बहुत ही अनुभवी हो। उसे विषय केन्द्रित और विद्यार्थी केन्द्रित पुस्तक बनाने के लिए शैक्षणिक मनोविज्ञान का एक अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

2. **विषयों का संगठन** (Organisation of Content) विषयों का संगठन क्रमानुसार होना चाहिए और पूर्ण विषयों को इकाईयों, उप-इकाईयों में तर्कपूर्ण विभाजन

Scanned by CamScanner

करना चाहिए। विषयों की तालिका स्पष्ट रूप से क्रम को दर्शानी चाहिए, जिसमें विषय-सामग्री प्रदर्शित की गई है। विषयों की क्रमबद्धता, विचारों तथा सम्बन्धों की निरन्तरता पर ध्यान विषयों का संगठन करते समय देना चाहिए।

3. विषय का प्रस्तुतीकरण (Presentation of Content) विषय-सामग्री साधारण और सरल भाषा में पेश करनी चाहिए। विषयों का विवरण, वर्णन और व्याख्यान विद्यार्थियों की शब्दावली के अनुसार स्पष्ट होना चाहिए। तकनीकी तथ्यों का उदाहरणों के द्वारा वर्णन करना चाहिए। विषय की प्रस्तुतीकरण करते समय बच्चों की आवश्यकताओं और वातावरण को ध्यान में रखना चाहिए।

4. उद्देशिक और यथार्थ (Objective and accurate) विषय-सामग्री का व्यवहार उद्देशिक, सच्चा और मानवीय भ्रातृभाव, सामुदायिक और क्षेत्रीय अनुरूपता के आदर्शों को प्रभावित करने वाली किसी प्रकार के पक्षपात से स्वतन्त्र होनी चाहिए। वास्तविकता के संदर्भ में, घटनाओं का वर्णन और विश्वासों का प्रस्तुतीकरण सही होना चाहिए जोकि प्रभावशाली तर्कों और प्रमाणों के द्वारा स्वीकार किया गया हो।

5. उद्देश्य आधारित (Objective based) विषय-सामग्री का प्रस्तुतीकरण सामाजिक शिक्षा के अध्यापक के उद्देश्यों के साथ सम्बन्धित होना चाहिए। यह ज्ञान, सूझबूझ, कुशलता, रुचि और योग्यताओं के उद्देश्यों को पूरा करने के लक्ष्य से उद्देश्य केन्द्रित और उद्देश्य आधारित होने चाहिए। इकाई के अन्त में इसका सारांश जरूर होना चाहिए।

6. व्याख्यात्मक सामग्री (Illustrative material) सामाजिक शिक्षा की पाठ्य-पुस्तक में चित्रों, मानचित्रों, ग्राफ और समय रेखाओं आदि को प्रेरणात्मक रंगीन और प्रभावशाली रूप में पूरी तरहह से व्याख्या करनी चाहिए। पाठ्य-पुस्तक में पर्याप्त तालिका और चित्र होने चाहिए जो कि विषय-सामग्री को अच्छी तरह से समझने में विद्यार्थियों की सहायता करे।

7. भौतिक पक्ष (Physical aspect) पुस्तक का भौतिक पक्ष आकर्षक और रोचक होना चाहिए। जिल्द, छिपाई, पुस्तक का मुख्य पृष्ठ, कागज का गुण, सही आकार होना चाहिए। उत्साहपूर्ण और सजीव व्याख्याएं विद्यार्थियों की रुचियों का समर्थन करते हैं।

8. आधुनिकतम विषय (Up-to-date content) सामाजिक शिक्षा लगातार बदल रहा विषय है। इसलिए विषय, बल और व्यवहार समुदाय के जीवन और वातावरण में विकास के रूप में बदलने चाहिए। यह आधुनिकतम होना चाहिए। सामाजिक शिक्षा की पाठ्य-पुस्तक आधुनिकतम सामाजिक आर्थिक स्थितियों को प्रभावित करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

9. पाठ्य-पुस्तक के लिए पाठ का चुनाव मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए (The lessons selected for the text-book should be base on psychological principles) सामाजिक शिक्षा के लिए पाठ का चुनाव करते समय मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए। पाठ ऐसे होने चाहिए कि ये विद्यार्थियों की विभिन्न रुचियों के अनुसार है। विभिन्न विद्यार्थी बौद्धिकता, रुचियों और आवश्यकताओं के संदर्भ में एक-दूसरे से भिन्न है। उन सभी के लिए पाठ का समान प्रकार उपयुक्त नहीं है। विषय-सामग्री की प्रकृति ऐसी होनी चाहिए कि रट्टने पर बल देने की बजाय सूझबूझ पर बल देना चाहिए। इस प्रकार विषय-सामग्री की प्रकृति ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी रटन क्रिया पर बल देना बन्द कर दें। Alberty ने ठीक ही कहा है, "The learn to recite definitions glibly without having the slightest notion of the real meaning."

मनोवैज्ञानिक विचारों के द्वारा बच्चे स्वभाव से सक्रिय है। परन्तु केवल व्यावहारात्मक पाठ्यक्रम प्रचलित पाठ्य-पुस्तक में देखे जाते हैं, इसमें क्रियाओं का सहयोग नहीं है जिस का कारण यह है कि बच्चों में प्रजातान्त्रिक मूल्य विकसित नहीं होते क्योंकि उनका विकास केवल प्रत्यक्ष अनुभवों के द्वारा सम्भव है। इसमें कोई शक नहीं है कि, परम्परागत पाठ्य-पुस्तकें बच्चों में बौद्धिक विकास लाते हैं। परन्तु नागरिकता के मुख्य मूल्यों जैसे सहानुभूति, सहनशीलता, बदलाव और स्वतन्त्र विचार में विश्वास आदि का विकास केवल प्रत्यक्ष अनुभवों और क्रियाओं के द्वारा किया जा सकता है। परन्तु दुर्भाग्यवश हमारी प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें केवल विषय-केन्द्रित पाठ्यक्रम है। यह केवल पढ़ने की प्रक्रिया में ही विघ्न नहीं डालते बल्कि बच्चों का विकास पूरी तरह से स्थान नहीं लेते हैं।

10. पाठ्य-पुस्तक विद्यार्थियों के स्तर तथा आयु के अनुसार होनी चाहिए (A text-book should be according to the standard and age of the students) : यह बच्चों पर केन्द्रित सिद्धान्त के रूप में भी जाना जाता है। पाठ्य-पुस्तक में ऐसा पाठ्यक्रम होना चाहिए जोकि आम बच्चों की आवश्यकताओं और क्रियाओं पर आधारित है। केवल वही विषय इसमें सम्मिलित करने चाहिए जो कि बच्चों में आत्म-विश्वास और नेतृत्व को प्रेरित करते हों।"

11. पाठ्य-पुस्तक में पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए चुनौतिपूर्ण होना चाहिए (The curriculum in the text-book should be challenging to the students) : एक अच्छे पाठ्य-पुस्तक का पाठ्यक्रम न तो ज़्यादा कठिन होना चाहिए, न ही आसान। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह विद्यार्थियों में चुनौती पैदा करने वाला होना चाहिए। परन्तु यह इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि विद्यार्थी इससे जी चुराएं।

Scanned by CamScanner

आम तौर पर आजकल, कुछ विषय लेखकों के द्वारा दिए गए हैं और वे सम्बन्धित विषय सामग्री को इकट्ठा करते हैं और एक पाठ्य पुस्तक के रूप में पेश करते हैं। परन्तु यह याद रखना चाहिए कि पाठ्य पुस्तकों तथा विषय सामग्री के निर्माण में कुछ वैज्ञानिक आधार है जिसमें विषयों से सम्बन्धित कुछ विशेष सिद्धान्तों का संकलन है। इन सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त प्रचुरता का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक विषय के लिए कितनी विषय सामग्री होनी चाहिए, यह दो बातों पर निर्भर करती है। पहली यह कि प्रत्येक स्तर पर एक औसत विद्यार्थी की व्यापक शक्ति कितनी है जो कि सक्रिय है और दूसरी यह कि विद्यार्थी का उस विषय सामग्री के साथ हृदयंगम करने का कितना समय है। इन दोनों के परिणामों में यही अन्तर है कि कोई भी अर्थपूर्ण खोजें हमारे देश और बच्चों की स्थिति पर नहीं बनाई गई हैं। इसका कारण यह है कि हमारे बच्चे अशैक्षणिक क्रियाओं तथा अर्थरहित क्रियाओं में ज्यादातर अपना समय व्यतीत करते हैं। इसलिए, यह आवश्यक बन जाता है कि पाठ्यक्रम केवल विद्यार्थियों के स्तरों के अनुसार नहीं होना चाहिए बल्कि यह चुनौतीपूर्ण भी होना चाहिए और पाठ्य पुस्तकों का निर्माण इस पर आधारित होना चाहिए।

12. भाषा (Language) पाठ्य-पुस्तक की भाषा साधारण और प्रभावशाली होनी चाहिए। भाषा के निम्नलिखित गुणों का होना जरूरी है :

(i) आसान से कठिन तक (From Easy to Difficult) पाठ्य-पुस्तकों की रूपरेखा कठिन से आसान होनी चाहिए। छोटी कक्षाओं में वाक्य साधारण और छोटे होने चाहिए। उच्च कक्षाओं में वाक्यों की लम्बाई और शब्दों की कठिनता के स्तर बढ़ाए जा सकते हैं। पाठ्य पुस्तक को परिचित पाठ निष्कर्ष निकालने वाले पाठ की तुलना में आसान होनी चाहिए।

(ii) प्रकार (Variety) विषयों में प्रकार के द्वारा पाठ्य पुस्तक की रूप-रेखा में भी प्रकार होने चाहिए। एक अच्छे पाठ्य-पुस्तक के लिए विभिन्न रूपों को अपनाना बहुत जरूरी है।

(iii) मौलिकता (Originality) लेखक के मुख्य विचारों की मौलिकता पाठ्य-पुस्तक के प्रत्येक पाठ में व्यक्त करनी चाहिए।

13. छपाई (Printing) एक अच्छे पाठ्य-पुस्तक को बनाने के लिए यदि पाठ्य-पुस्तक की छपाई उच्च किस्म की न हो सभी सुविधाएँ निरर्थक बन जाएंगी। एक पाठ्य-पुस्तक के एक पब्लिशर का मुख्य कार्य इस छापना है। स्पष्ट छपाई के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(i) सम्पूर्ण पन्नों में दवात का फैलाव एक जैसा होना चाहिए।

(ii) सफेद, मोटा और मजबूत कागज छपाई के लिए प्रयोग करना चाहिए।

(iii) चित्र, ग्राफ और मानचित्र पाठ्य पुस्तक में सही आकार के होने चाहिए।

Scanned by CamScanner